## पद १८४

(राग: सोरट - ताल: एक्का)

धांव जगत्पालना रे। मुनिजनमन हरण शरण। दाखवी मज तुझे चरण। विनवितसे रमारमण। दीन पालना रे।।ध्रु.।। गोपीरमण गोविंद। गोपवेष बालमुकुंद। कंसांतक नंदकंद। वरद पालना रे।।१।। कृष्ण विष्णु वासुदेव। मुरमर्दन माधव। सनकादिक वामदेव। निमती तुझ्या चरणा रे।।२।। प्रल्हादाच्या आकांतासी। उडी घाली हांकेसरसी। उद्धरिले महादोषी। गणिका पूतना रे।।३।। पांडव प्रतिपालक। भक्तवत्सल भयहारक। सुरवर जन सुखदायक। विर्णिती गुणा रे।।४।। शेषशयन श्रीनिवास। जगतारक जगन्निवास। विनवितसे माणिकदास। भक्तपालना रे।।५।।